फरीदाबाद
मजदूर समाचार
जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 290 | 1/– | अगस्त 2012

अपरिचित मार्ग

सहमति में दरारें पड़ती रही हैं, दरारें डाली जाती रही हैं पर यह आज है कि सहमति टूट गई है, तोड़ दी गई है। आज सहमति बिखेर दी गई है, सहमति बिखर गई है।

भाई, रुक ! क्या है यह सहमति जिसकी बात कर रहे हो ?

सहमति जिसकी हम यहाँ बात कर रहे हैं उसका आधार पीड़ा रहा है। और, पीड़ा, वर्तमान में बढती पीड़ा ने उन अवधारणाओं को खाद-पानी दिया जिन्होंने वर्तमान को सहन करने के लिये उल्लासपूर्ण भविष्य के प्रस्ताव प्रस्तुत किये। सहमति जिसकी हम बात कर रहे हैं वह वर्तमान में पीड़ा को, कष्ट को बढा कर भविष्य में सुख-सौहार्द की अवधारणा, नीति, व्यवहार लिये रही है। "आज थोड़ा कष्ट और उठाओ, भविष्य सुखमय होगा" टिका था विश्वास पर। भविष्य, भविष्य ही रहा, कभी आज नहीं बना, वर्तमान नहीं बना – इसने एक के बाद दूसरे विश्वास को डगमगाया। उल्लास आज, प्रसन्नता वर्तमान में – यह शिशुओं का चरित्र तो हर काल मे रहा है। परन्तु बड़ों में उल्लास आज, प्रसन्नता वर्तमान में होने से सहमति भयभीत रही है। वर्तमान में प्रसन्नता के प्रस्ताव को लाँछना लगा कर, अथवा अति महिमामण्डित कर के, सामान्य जीवन से, आम लोगों से इसे परे की घोषित किया जाता रहा है। दरारें पड़ती रहने के बावजूद वर्तमान में पीड़ा-कष्ट बढाओ ताकि भविष्य में सुख-समृद्धि हो – इस पर सहमति बारम्बार बनती रही है।

आज हमारे समय में दुखद वर्तमान, सुखद भविष्य वाली सहमति टूट रही है, तोड़ी जा रही है। पहली बात तो बहुत सरल है – वस्तुओं का उत्पादन इतना ज्यादा हो गया है कि उन्हें कहाँ रखा जाये, यह एक बड़ी समस्या है। दूसरी बात भी कठिन नहीं है – ज्ञान के उत्पादन और फैलाव के पैमाने तथा गति किसी सीमा को नहीं मान रहे, हर बन्धन को तोड़ रहे हैं। तीसरी बात कौशल की, तो हरियाणा में ही आज 160 इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। वस्तु, ज्ञान, कौशल की बहुतायत ने रंग, लिंग, धर्म, क्षेत्र, जाति आदि आधारित पहचानों को गड्ड-मड्ड कर दिया है।

चाहें तो कोई प्रगति और विकास के इस कमाल की पूजा-अर्चना कर सकते हैं, ढोल भी पीट सकते हैं लेकिन...... लेकिन वायु, जल, मिट्टी ? हवा, पानी, जमीन इस कदर प्रदूषित हो गये हैं, प्रदूषित हो रहे हैं कि पृथ्वी पर हर प्रकार का जीवन, मानव जीवन, स्वयं जीवन दाँव पर लग गया है। वर्तमान में पीड़ा और भविष्य में सुख के प्रस्ताव पर सहमति पीड़ा का प्रसार करते-करते हास्यास्पद स्थिति में ले आई है।

ऐसे में इस सहमति के टूटने-तोड़ने को पट्टियाँ बाँध कर, टाँके लगा कर, दवा पिला कर थामा-रोका-पाटा नहीं जा सकता। अपने चारों तरफ हम वर्तमान में दुख और भविष्य में सुख पर सहमति को अनेक स्तरों-पैमानों पर टूटते-तोड़े जाते देखते हैं। व्यक्ति तथा समूह के बीच टकराव व साँझापन के गतिशील सम्बन्ध विस्फोटक रूप लिये हैं, ले रहे हैं।

सहमति का यह टूटना क्या-क्या लिये है यह अभी अस्पष्ट है, अनिश्चित है, खुला है। सहमति से जुड़ी आदतें तो अव्यवस्था में भय देखेंगी-दिखायेंगी। सहमति से जुड़ा अनुशासन भयभीत हो कर अति अनुशासन की बातें कर रहा है, और अधिक करेगा। हड़बड़ाहट में – बदहवासी में – नासमझी में घाव कुरेदने में आनन्द पाते, पीड़ा में सुख पाते साधु-फकीर-क्रान्तिकारी नये आवरणों में सहमति की पुनः स्थापना के लिये प्रयास कर रहे हैं, कोशिशें करेंगे।

ऊपर कही बातें तो होती रही हैं, होती रहेंगी पर इनका अब कोई महत्व नहीं है। आज जो अनिश्चित है, अस्पष्ट है, खुला है उस पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। ध्यान केन्द्रित हो रहा है, ध्यान केन्द्रित ही नहीं हो रहा बल्कि निश्चित स्वरूपों में, स्पष्ट रूपों में, खुलेआम बड़े-बड़े जनसमूह ताजगी लिये नई भाषा, नूतन मुहावरों, नवीन आकृतियों में प्रस्तावों का उत्पादन कर रहे हैं, प्रस्तावों को प्रस्तुत कर रहे हैं, प्रस्तावों को ठोस शक्ल दे रहे हैं। हवा में नया कुछ है वाली बात तो है ही, हवा में जो है उसे ग्रहण किया जा रहा है। ग्रहण करना, नई ऊर्जा का समावेश, बहुआयामी पथों पर प्रस्थान।■

निमन्त्रण

आज ऐसे तौर-तरीकों की आवश्यकता है जो सात अरब लोगों की सक्रिय साझेदारी में योगदान दे सकें। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। अगस्त में 26 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 9 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

26 अगस्त को सुबह 9 से 11 बजे के दौरान गुडईयर टायर फैक्ट्री के अपने अनुभवों को वहाँ काम कर चुका एक मजदूर जारी रखेगा।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

● *हरियाणा सरकार* द्वारा 1 जुलाई से देय महंगाई भत्ता (डी.ए.) की घोषणा अगस्त-आरम्भ तक नहीं।
● *दिल्ली सरकार* द्वारा भी महंगाई भत्ता (डी.ए.) की घोषणा अगस्त-आरम्भ तक नहीं।

बिन्द्रा एक्सपोर्ट मजदूर : "बी-89 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। कम्प्युटराइज्ड इम्ब्राइड्री मशीन ऑपरेटरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6700 रुपये। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4500 रुपये – महिला मजदूरों की दिन के 12 घण्टे ही ड्यूटी। फैक्ट्री में 50 मजदूर काम करते हैं। पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं है। ई.एस. आई. शायद 2-3 की है जिन से घरेलु नौकर की तरह काम करवाया जाता है। एक हैल्पर का फैक्ट्री में पैर टूटा – इलाज के लिये उसे मात्र 700 रुपये दिये। पीने का पानी खराब – 8 मजदूरों को पीलिया हो गया पर कम्पनी पानी सुधारने के लिये तैयार नहीं हुई। आपस में पैसे एकत्र कर मजदूर पानी खरीदते हैं। शौचालय बहुत-ही गन्दे, बिजली का बल्ब तक नहीं है। जून की तनखा 13 जुलाई को दी। मैनेजिंग डायरेक्टर गाली देता है।"

ओरचिड ओवरसीज श्रमिक : "60-61डी उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में 4 महिला और 4 पुरुषों की ही ई.एस.आई. तथा पी.एफ. हैं। कोई ठेकेदार नहीं है, सब मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। तीस महिला मजदूरों को सुबह 6 बजे बुलाते हैं और रात को 9½ छोड़ते हैं। रोटी के लिये पैसे नहीं देते, 15½ घण्टे काम करवाने के दौरान एक कप चाय भी नहीं देते। रविवार को भी सुबह 6 से रात 9½ की ड्यूटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सुपरवाइजर मैडम बहुत गाली देती है। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और हैल्परों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं – हैल्परों की तनखा 4000 रुपये। यहाँ ***स्पीड, पोल्समिल, नेक्स्ट*** के लिये परिधान तैयार किये जाते हैं।"

सीनियर फ्लैक्सोनिक्स कामगार : "प्लॉट 89 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने जो चाहा वह फिर किया। पुलिस की सहायता से मैनेजमेन्ट ने 19 मई को देर रात हमें फैक्ट्री से निकाला था। यूनियन के निर्देश पर हम ने फैक्ट्री गेट पर धरना आरम्भ किया और फिर यूनियन के आदेश पर गुड़गाँध में श्रम विभाग कार्यालय पर धरना शुरू किया। तारीखें, श्रम विभाग में तारीख पड़ती रही। मैनेजमेन्ट और यूनियन में 7 जुलाई को समझौता हुआ। कैजुअल-ठेकेदार के जरिये रखे सब पुराने मजदूर बाहर रहेंगे। स्थाई मजदूरों में 4 पहले से ही निलम्बित थे, अब 8 और हो गये हैं। बारह निलम्बित स्थाई मजदूर जाँच के दौरान बाहर रहेंगे और सोमवार, 9 जुलाई से 39 स्थाई मजदूरों ने फैक्ट्री में काम आरम्भ कर दिया। हम बहुत शर्मिन्दा हैं। हम 300 ने जनवरी में विरोध आरम्भ किया था और जुलाई में हम 30 रह गये हैं।"

ईरा इलेक्ट्रीकल्स वरकर : "सैक्टर-55, नोएडा में कार्यालय वाली ईरा कम्पनी नोएडा, कानपुर, दिल्ली, गोवा, रतलाम, नासिक, जालन्धर में भी बिजली से जुड़े कार्य करती है। कम्पनी नये हैल्पर की तनखा 3500 रुपये, पुराने की 4000 और इलेक्ट्रीशियन की 4800-7500 रुपये लगाती है। किसी भी मजदूर की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इधर सूरजपुर में ***यामाहा*** मोटरसाइकिल कम्पनी ने आदेश दे रखा है कि बिना ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले मजदूर फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करेंगे पर ईरा कम्पनी इस आदेश का पालन नहीं करती और यामाहा फैक्ट्री में मजदूरों से काम करवा रही है। यामाहा में इलेक्ट्रिकल मेन्टेनैन्स का ठेका ईरा कम्पनी के पास है और यह मजदूरों से सुबह 9 से रात 8 बजे तक रोज काम करवाती है। यामाहा फैक्ट्री में शनिवार तथा रविवार को उत्पादन बन्द रहता है पर ईरा कम्पनी के मजदूरों का काम जारी रहता है – शनिवार को सुबह 9 से रात 10-11 बजे तक और रविवार को 9 से 5। कई बार रात को भी जाना पड़ता है – रात से सुबह 4 बजे तक काम और फिर सुबह 9 से ड्यूटी। यामाहा में बिजली काट कर मरम्मत कार्य नहीं कर सकते – बहुत खतरा रहता है। मजदूरों के निवास के लिये मुबारकपुर गाँव में ईरा कम्पनी ने 4 कमरे किराये पर लिये हैं। नजदीक ही ***आकृति होटल,*** बैंक्वेट हॉल, कॉल सेन्टर की इमारतें बन रही हैं। कहते हैं कि यह सब मायावती की हैं और इनमें भी ट्रान्सफॉर्मर से स्विच बटन तक बिजली का काम ईरा इलेक्ट्रीकल्स के पास है। तेरहवीं मंजिल तक काम – कोई हेल्मेट नहीं, कोई बैल्ट नहीं। ऊँचाई पर कार्य करते समय एक मजदूर को झटका लगा, गिरा, पैर टूटा।"

साकेत फैब्स मजदूर : "प्लॉट 286 सैक्टर-58, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट और स्थाई मजदूरों में हाथापाई हुई और 14 जून को कम्पनी ने 18 मजदूरों को निलम्बित कर दिया। एक यूनियन वाले आये। निलम्बित 18 को ड्यूटी पर लिया जाये की माँग करते हुये 24 जून को बाकी के 80-85 स्थाई मजदूर फैक्ट्री के बाहर निकल गये। श्रम विभाग में शिकायत, श्रम विभाग में तारीखें। कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये मजदूर रखने पहले ही आरम्भ कर दिये थे, 24 जून के बाद नये मजदूरों की सँख्या 150 हो गई। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है – मैनेजमेन्ट ने हलवाई बैठा दिया और मुफ्त में भोजन खिलाने लगी। मजदूर फैक्ट्री में ही रहें और 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करें। फैक्ट्री में 26-27 पावर प्रेस हैं और यहाँ ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर*** तथा ***मारुति सुजुकी*** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों के पावर प्रेसों पर हाथ बहुत कट रहे हैं – 24 जून को स्थाई मजदूरों के बाहर जाने और 8 जुलाई के बीच ही चार के हाथ कट चुके हैं। एक मजदूर की चार उँगली कटी, दो मजदूरों की दो-दो उँगली कटी, एक मजदूर की एक उँगली कटी। प्रायवेट में इलाज। यूनियन आई-गई हुई। पाँच स्थाई मजदूर नौकरी छोड़ गये। श्रम विभाग से 23 जुलाई को स्थाई मजदूर फैक्ट्री में काम करने पहुँचे और 5 निलम्बित को बाहर छोड़ फैक्ट्री में प्रवेश किया। कम्पनी ने 23 जुलाई को ही हलवाई हटा दिया और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को निकालने लगी है – 2 अगस्त तक 35 निकाल दिये हैं। अन्दर आने के बाद स्थाई मजदूर पाँच निलम्बित को ड्यूटी पर लाने के लिये कदम उठा रहे हैं। गेट पर नारे नहीं लगाते। सुबह 10½, दोपहर बाद 3½ , और साँय 6½ वाले चाय के 10-10 मिनट जो कम्पनी देती है उन्हें स्थाई मजदूर 30-30 मिनट के बना रहे हैं। सुपरवाइजर और मैनेजर घूमते रहते हैं पर कहते कुछ नहीं – मारुति मानेसर में 18 जुलाई ने सुपरवाइजरों और मैनेजरों को बहुत डरा दिया है। आगे वाले मजदूर बैठ जायेंगे तो पीछे वाले तो बैठेंगे ही – चेन सिस्टम से उत्पादन में यह होता ही है। स्थाई मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों से कहते हैं कि काम हमारी तरह करो। कभी यह तो कभी वह मशीन बन्द हो जाती है। स्थाई मजदूरों के अन्दर आने के बाद मजदूरों की सँख्या बढी पर उत्पादन कम हुआ है।"

उषा एमरफस मेटल्स श्रमिक : "486-87 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 35 स्थाई मजदूरों ने 12.3.2011 को यूनियन का पंजीकरण करवाया। यूनियन ने 22.3.2011 को मैनेजमेन्ट को माँग-पत्र दिया। श्रम विभाग के चक्कर आरम्भ हुये – ग्यारह महीने हो गये चक्कर लगाते तब 21.2.2012 को मैनेजमेन्ट ने 23 स्थाई मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया और बाकी स्थाई मजदूर यूनियन के निर्देश पर समर्थन में बाहर आ गये। फैक्ट्री गेट के बाहर बैठने की जगह नहीं है पर सब स्थाई मजदूर 21 फरवरी से बैठे हैं और आज 27 जुलाई को भी बाहर बैठे हैं। कम्पनी ने 21 फरवरी से ही ठेकेदार के जरिये मजदूर रख लिये हैं और फ़ैक्ट्री में उत्पादन कार्य हो रहा है पर यूनियन की शिकायत पर जाँच वाले आते हैं तो कम्पनी कह देती है कि फैक्ट्री के अन्दर कोई नहीं है। श्रम विभाग में श्रम अधिकारी से उपश्रमायुक्त और उपश्रमायुक्त से श्रम अधिकारी के पास वाली बात हो रही है।"

ईस्टर्न मेडिकिट कामगार : "उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की पाँच फैक्ट्रियों में अगस्त-आरम्भ में भी स्थिति 18 मई वाली ही है। फैक्ट्रियों के 1200 स्थाई मजदूर दिन-रात चौकीदारी कर रहे हैं और मैनेजमेन्ट गायब है। हमें मैनेजमेन्ट और यूनियन में कोई फर्क नजर नहीं आ रहा। श्रम विभाग में तारीखें, डी.सी. को ज्ञापन, श्रम मन्त्री को ज्ञापन, यूनियनों के नेताओं को बुला कर भाषण **(बाकी पेज तीन पर)**

अँग्रेजी में बम और भोले का बम

★अँग्रेजी वाला बम ध्वंस-विनाश लिये है और भोले वाला बम शक्ति-सम्पत्ति-सत्ता का विसर्जन-बिखेरना-मिटाना लिये है। आज जो है उसके ध्वंस से, उसके विसर्जन-बिखेरने-मिटाने से अच्छी कोई बात है तो वह है नये का निर्माण। संयोग है, सुन्दर संयोग है कि हम ध्वंस-विसर्जन-नई रचना की त्रिवेणी के संगम-समय, संगम-स्थल पर साँस ले रहे हैं, प्राणमय हैं। आमूलचूल परिवर्तन के लिये विश्व के सात अरब लोगों के जुड़ने-जोड़ने के लिये सामाजिक मन्थन में योगदान का समय है यह।

★दो और दो चार वाले लोग नियन्त्रित विस्फोटों के पुजारी हैं। उकसाना और उकसा कर नियन्त्रित विस्फोट करवाना अपनी जकड़ को, अपने नियन्त्रण को बनाये रखने के इनके मूल सूत्रों, मूल मन्त्रों में है।

★समय बदल गया है। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। कब, कहाँ, और कौन-सी "सामान्य-सी" बात विकराल रूप धारण कर लेगी यह ज्ञानियों के लिये ही नहीं बल्कि ज्ञान-संस्थानों के लिये भी अबूझ पहेली है। इसलिये "आंकलन में कहाँ गलती हुई" पर चर्चायें करना विशेषज्ञों की दिनचर्या बन गई है।

★सुरक्षा सर्वोपरि है। होंगे तभी तो बाकी कुछ होगा। यह "सुरक्षा सर्वोपरि" ही है कि पृथ्वी के चप्पे-चप्पे को शस्त्रों और सैनिकों से पाट कर सरकारें अन्तरिक्ष का सैन्यिकरण करने में जुटी हैं। और, फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में लगे प्रत्येक मजदूर के संग तीन सुपरवाइजर, पाँच मैनेजर और 17 सेक्युरिटी गार्डों की तैनाती आवश्यक बन गई है।

फैक्ट्रियों .... *(पेज दो का शेष)*

करवाना, तीन महीने में कई मील चला एक प्रदर्शन। लक्षण सब को फैक्ट्री नहीं चलाने के दिखते हैं पर फिर भी वही पुराना ढर्रा। हमारे आसपास उद्योग विहार की हजारों फैक्ट्रियों में लाखों मजदूर काम करते हैं जिनके पास हम रोज जा सकते हैं पर जा नहीं रहे। हम स्थाई मजदूरों में भी कई को अन्य मजदूरों के पास जाने में शर्म आ रही है।"

एशियन अस्पताल वरकर : "7 मई को फरीदाबाद स्थित एशियन इन्सटीट्युट ऑफ मेडिकल साइन्सेज की 330 और सेन्ट्रल अस्पताल की 130 नर्सों ने हड़ताल आरम्भ की थी। सेन्ट्रल में हड़ताल एक महीने चली। एशियन अस्पताल में केरल के मुख्य मन्त्री के हस्तक्षेप के बाद 3 जुलाई को समझौते की घोषणा हुई। केरल के मुख्य मन्त्री के सम्मुख हुये समझौते में 5 नर्सों को 15 दिन निलम्बित रखने के बाद ड्युटी पर लेने की बात थी। उन 5 को ड्यूटी पर नहीं लिया गया और उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। कुछ अन्य नर्सें भी ड्यूटी पर जाने के बाद नौकरी छोड़ गई हैं।"

मजदूर हितैषी मजदूर ..... *(पेज चार का शेष)*

के रोग, चर्म रोग, असामयिक मृत्यु।

(च) सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से एक मजदूर की गुजर-बसर भी बहुत मुश्किल है। ऐसे में अधिक समय काम करना एक मजबूरी है तो छोटे-से परिवार के पालन-पोषण के लिये भी परिवार के अन्य सदस्यों के लिये दो पैसे कमाना एक अनिवार्यता है। ऐसे में भोजन बनाना, कपड़े धोना, बच्चों की देखभाल अतिरिक्त बोझ बन जाते हैं। और, कानून है 37-40 दिन काम करवाने के बाद 30 दिन के पैसे देना, परन्तु वास्तव में फरीदाबाद में ऐसे मजदूरों की बहुत बड़ी सँख्या है जिन्हें 50-60 दिन काम करते हो जाते हैं तब उन्हें 30 दिन के पैसे दिये जाते हैं। नौकरी छोड़ने पर 10-15 दिन किये काम के पैसे तो यहाँ मजदूरों को आमतौर पर दिये ही नहीं जाते।

(छ) गाली और धमकी तो जैसे हर साहब का अधिकार है। स्त्री मजदूर हों चाहे पुरुष मजदूर, यहाँ फैक्ट्रियों में दुर्व्यवहार का सामना सब मजदूरों को करना पड़ता है। लगता है कि नौकरी करने की मजबूरी मजदूर से कुछ भी करवा सकती है। गाँवों से बदहाल किसानों और दस्तकारों तथा ग्रामीण मजदूरों की औलादें बढती सँख्या में फैक्ट्रियों में खटने को आ रही हैं। एक मजदूर की जहाँ आवश्यकता है वहाँ बीस-पचास पंक्ति में खड़े हैं। अगर मजदूर स्वयं कुछ नहीं करेंगे तो बद से बदतर होती इन हालात की कोई सीमा नजर नहीं आती।

6. अकेले-अकेले मजदूर काफी-कुछ कर सकते हैं और करते हैं, लेकिन यह बदतर हो रहे हालात में कोई खास ब्रेक भी नहीं लगा पा रहे। छोटे-छोटे समूहों में मजदूर काफी-कुछ कर सकते हैं और करते हैं, परन्तु यह भी बदतर हो रहे हालात की रफ्तार में ब्रेक नहीं लगा पा रहे। मजदूरों के बड़े कहे जाने वाले समूह ऐसे हैं जिन में अधिकतर मजदूर सामान्य तौर पर निष्क्रिय रहते हैं और नेताओं के आदेश पर जो कुछ होता है वह अब तो बदतर होते हालात की रफ्तार पर ब्रेक लगाने का भ्रम भी खो चुका है। इन परिस्थितियों में हम ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।

7. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का ध्येय ही बढती सँख्या में मजदूरों की सक्रियता बढाना है। इसके लिये :

(क) स्थाई मजदूरों और अस्थाई मजदूरों, परमानेन्ट और टेम्परेरी मजदूरों के बीच जोड़ों को बढाने के लिये कार्य करना। इस फैक्ट्री और उस फैक्ट्री के मजदूरों के बीच जोड़ों को बनाने-बढाने के लिये कार्य करना। स्थाई मजदूर और अस्थाई मजदूर, इस फैक्ट्री के मजदूर और उस फैक्ट्री के मजदूर, सब मजदूर संगठन के सदस्य बन सकते हैं।

(ख) मजदूरों द्वारा स्वयं कदम उठाने को प्रोत्साहित करना और मजदूरों द्वारा एक-दूसरे की सहायता करने में योगदान देना। बहुत-कुछ है जो अकेली मजदूर और मजदूरों का छोटा समूह स्वयं कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में संगठन अनुभवों के आदान-प्रदान में सहायक की भूमिका निभायेगा। क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये, कैसे करना चाहिये और कैसे नहीं करना चाहिये को मजदूरों के बीच व्यापक चर्चा में लाने में संगठन योगदान देगा। एक मजदूर की, एक कार्यस्थल के मजदूरों की बातों को अन्य मजदूरों, अन्य कार्यस्थलों के मजदूरों तक पहुँचाना संगठन की प्राथमिक गतिविधियों में होगा। जुड़ने-जोड़ने को व्यापक बनाना सामुहिक कदमों के बढते आधार की आवश्यकता की पूर्ति करने की अनिवार्य शर्त है।

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के सदस्य बनें। "समय नहीं है" के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है।

फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक

हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक

पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन: 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक

गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब "मजदूर मोर्चा" के सम्पादक हैं।

फोन : 9999595632

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्षय है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें, सहयोगी बनें

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का। आज से डेढ सौ-पौने दो सौ वर्ष पहले भाप-कोयले वाली मशीनों के समय मजदूर काम के आधे समय में अपनी दिहाड़ी पैदा करते थे और बाकी का आधा समय फैक्ट्री संचालकों का मुनाफा पैदा करता था। भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। इसीलिये आज से डेढ सौ वर्ष पहले विश्व में किसी भी सरकार के पास एक लाख सैनिकों वाली सेना नहीं थी जबकि आज भारत सरकार के पास ही तेरह लाख सैनिकों वाली फौज के अलावा एयर फोर्स, नेवी, बारह-तेरह लाख सैनिकों वाले अर्ध-सैनिक बल (सी आर पी, बी एस एफ आदि), हर प्रान्तीय सरकार के पास सशस्त्र पुलिस बल, हर राज्य सरकार की थानों वाली पुलिस आदि हैं। आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. वह राजाओं का अन्तिम दौर था जब राजा खुद ही अपने कानूनों को तोड़ने लगे थे। आज कानूनों का उल्लंघन सामान्य है और कानूनों का पालन अपवाद की श्रेणी में है। हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है।

4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर फरीदाबाद में हम ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।

5. फरीदाबाद में इस समय फैक्ट्रियों में सामान्य हालात यह हैं :

(क) स्थाई कार्य के लिये अस्थाई मजदूरों की भरमार। फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूर पाँच-दस-पन्द्रह-बीस प्रतिशत हैं। विशेष कारणों से किसी फैक्ट्री में पचास प्रतिशत के करीब स्थाई मजदूर हैं और अनेकों फैक्ट्रियों में तो सिर्फ स्टाफ के लोग स्थाई हैं, एक भी मजदूर स्थाई नहीं है। परमानेन्ट मजदूरों और टेम्परेरी मजदूरों की तनखा आदि में बहुत फर्क जहाँ स्थाई मजदूरों में डर-भय पैदा करता है वहीं मजदूरों में श्रेणियाँ बना कर अतिरिक्त विभाजन उत्पन्न करता है। अप्रेन्टिसों को कम्पनियाँ बहुत-ही सस्ते मजदूरों के तौर पर इस्तेमाल करती हैं और ट्रेनी के सिर पर हर समय तलवार लटकी रहती है।

(ख) वर्षों से फैक्ट्री में लगातार काम करते मजदूरों को अस्थाई रखने के दो मुख्य तरीके हैं : 1) कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये जाते कैजुअल वरकर जिन्हें छह महीने में कागजों में ब्रेक दे देते हैं ; 2) ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखना। कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों में, दोनों में दो कैटेगरी बना रखी हैं : 1) वह मजदूर जिन्हें फैक्ट्री के रिकार्ड में दिखाते हैं ; 2) वह मजदूर जो फैक्ट्री में काम करते हैं पर जिन्हें फैक्ट्री के दस्तावेजों में दिखाया नहीं जाता। फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में ऐसे मजदूरों की बहुत-ही बड़ी सँख्या है जिन्हें दस्तावेजों में दिखाया नहीं जाता — इन मजदूरों की ई. एस.आई. नहीं होती, इन मजदूरों की पी.एफ. नहीं होती।

(ग) फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की शिफ्टें सामान्य बन गई हैं। सोलह घण्टे, बीस घण्टे, छत्तीस घण्टे लगातार काम करना फैक्ट्री मजदूरों के बीच कोई अजूबी चीज नहीं है। साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के तीसों दिन काम फैक्ट्रियों में आम बात है। साढे आठ घण्टे कार्य के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं पर 98-99 प्रतिशत मामलों में भुगतान दुगुनी दर से नहीं करते।

(घ) मन तो मजदूरों को हर समय मारना पड़ता है, फैक्ट्रियों में अंग भंग होना सामान्य बात है। आमतौर पर एक्सीडेन्ट छिपाये जाते हैं, मैनेजमेन्ट एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती। उत्पादन बढाने के फेर में सुरक्षा उपाय तक कम्पनियाँ हटा देती हैं। खर्च में कटौती के मैनेजमेन्टों के प्रयास फैक्ट्रियों में अतिरिक्त प्रदूषण लिये हैं। सड़क पर खतरा, फैक्ट्री में खतरा। मजदूरों की नींद पूरी नहीं होती और तनाव हर कार्यस्थल पर, प्रत्येक निवास स्थान पर। दो पैसे कमाने की मजबूरी में फैक्ट्रियों में काम करते मजदूर वास्तव में कमाते हैं मन के रोग और तन की पीड़ा —कटे हाथ, साँस की तकलीफें, पेट

(बाकी पेज तीन पर)

करते हैं - और करिये - बताईये

प्लॉट 162 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित कृष्णा लेबल फैक्ट्री में काम करती कुसुम 9 जुलाई को सुबह ड्यूटी के लिये जा रही थी। पौने नो बजे फेज-1 में पीर बाबा के निकट पानी के दो टैंकर जोड़े तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने कुसुम के टक्कर मारी। कुसुम का दाहिना पैर कुचल गया।

प्लॉट 208 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित गौरव इन्टरनेशनल फैक्ट्री में ड्यूटी के लिये जा रही कृष्णा ने कुसुम को उठाया। कृष्णा की कुसुम से कोई जान-पहचान नहीं थी, दोनों एक-दूसरे के लिये अजनबी थी।

प्लॉट 189 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित ओरचिड फैक्ट्री में ड्यूटी के लिये जा रहा राजा सहायता के लिये रुका।

कृष्णा और राजा ने अपनी-अपनी ड्यूटी छोड़ी, अपनी-अपनी दिहाड़ी की बात को किनारे किया और घायल कुसुम को गुड़गाँव में सरकारी अस्पताल ले गये। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने कुसुम को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल रैफर कर दिया। कुसुम के साथ ही फैक्ट्री में काम करता उसका भाई भी तब तक अस्पताल पहुँच गया था।

कृष्णा, राजा और कुसुम का भाई उसके साथ सफदरजंग अस्पताल गये। वहाँ 12 बजे से पहले पहुँच गये थे पर कभी यह कागज लाओ तो कभी वह कागज लाओ कह कर चक्कर कटवाते रहे और कुसुम को अस्पताल में भर्ती नहीं किया। दलालों के माध्यम से 7000 रुपये दिये तब रात 10½ बजे कुसुम को अस्पताल में भर्ती किया और ऑपरेशन थियेटर ले गये। नट-बोल्ट डाल कर पैर को टाइट किया है। बिस्तर दिया। कृष्णा पूरे दिन सफदरजंग अस्पताल में कुसुम के साथ रही। राजा रात को भी रहा। कुसुम और उसके भाई की सहायता के लिये राजा 10, 11 तथा 12 जुलाई को भी सफदरजंग अस्पताल व कापसहेड़ा के बीच चक्कर लगाता रहा।

12 जुलाई को डॉक्टरों का पैनल आया और कहा कि कुसुम को रक्त देना बहुत जरूरी है। रक्त देने आदमी लाओ...... एक डॉक्टर ने कुसुम का बेड नम्बर, वार्ड नम्बर, भाई का फोन नम्बर दलाल को दे दिये। डॉक्टर ने दबाव बनाया : पाँच युनिट रक्त तत्काल लाओ। दलाल ने एक युनिट के 3000 रुपये माँगे — दो युनिट के 6000 रुपये दिये।

बूढी माँ के साथ कुसुम और भाई कापसहेड़ा में रहते हैं। उस प्लॉट में 145 कमरे हैं और कई फैक्ट्रियों के मजदूर वहाँ रहते हैं। सब ने सहयोग दिया। मजदूरों ने मिलजुल कर 4000 रुपये एकत्र किये।

पुलिस ने रिपोर्ट में सामान्य चोट लिखी। पट्टी करके भेज दिया लिखा। सफदरजंग अस्पताल रेफर किया की बात नहीं लिखी। ट्रैक्टर को दो टैंकर के साथ थाने ले गये थे, एक टैंकर को वहाँ से ले जाने दिया और रिपोर्ट में ट्रैक्टर के एक टैंकर जुड़े होने की बात लिखी। वैसे, हरियाणा पुलिस कुसुम के पीछे सफदरजंग अस्पताल पहुँची थी और एक लिखे बयान पर हस्ताक्षर करवा कर वहाँ से निकल ली थी। रक्त की आवश्यकता वाले दिन, 12 जुलाई को ट्रैक्टर-टैंकर मालिक से फोन पर सम्पर्क किया। थाने के पास उन से मुलाकात की और स्थिति बता कर आर्थिक सहायता का अनुरोध किया। ट्रैक्टर-टैंकर मालिक ने कहा कि एक टैंकर को छुड़ाने के लिये उसने 20 हजार रुपये थाने में दिये थे और अब तो केस दर्ज हो चुका है, ट्रैक्टर-टैंकर की जमानत हो गई है — आर्थिक मदद नहीं कर सकता..... एक पुलिसवाला थाने से आया और बोला : मत दो पैसे!

31 जुलाई को भी कुसुम सफदरजंग अस्पताल में थी।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14